त्वरित चारा विकास कार्यक्रम
सफलता की कहानी

दुग्ध समिति दलौदारैल (मन्दसौर)

भारत जैसे देश के ग्रामीण क्षेत्रों में दुधारू पशुपालन एक महत्वपूर्ण इकाई है, ज्यादातर ग्रामीण दुधारू पशुओं को ही पालते है। पशुपालन के लिये समुचित खाद्यान्न का प्रबंधन पूरे वर्ष भर करना बहुत जरूरी है। कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ की हड्डी है, तथा पशु सम्पदा कृषि की अस्थिमज्जा है। पशुओं को वर्ष भर सूखा चारा गेंहू का भूसा पुआल उपलब्ध को सकता है, परंतु हरा चारा नहीं जबकि दूध उत्पादन में हरे चारे का अत्यधिक महत्व है।

इसी तारतम्य में भारत सरकार द्वारा स्वीकृत त्वरित चारा विकास कार्यक्रम (AFDP) खरीफ/रबी मौसम हेतु दुग्ध समितियों के माध्यम से चलाया जा रहा है जिसमें लगभग आधा एकड़ रकबे में बोने के लिये दुग्ध उत्पादकों को उन्नत हरे चारे के बीज का निःशुल्क वितरण तीन वर्षों से किया जा रहा है।

इसी योजना के तहत रबी मौसम में दुग्ध सहकारी समिति दलौदारैल के तीन हितग्राहियों का चयन किया गया। प्रत्येक हितग्राही को 3 किलो बरसीम बीज तथा साठ किलो जई बीज निःशुल्क वितरण किया गया। बरसीम के चारे को हरे चारे का राजा भी कहा जाता है। दिनांक 15 अक्टूबर 2012 को प्रत्येक हितग्राही द्वारा बरसीम एवं जई के बीजों को खेतों में बोया गया जिसका परिणाम यह रहा कि लगभग 45–50 दिनों के बाद हरे चारे की पहली कटाई होने लगी। दुधारू पशुओं का हरा चारा उपलब्ध होना प्रारंभ हो गया। एक हितग्राही श्रीमति सम्पत बाई पति श्री राम नारायण पाटीदार से खेत पर जाकर चर्चा में ज्ञात हुआ कि वे चार गायों का पालन करती है। प्रति दिन तीनों गाय से 22–24 लीटर दूध का उत्पादन हो रहा था। हरा चारा बरसीम खिलाने के कुछ ही दिनों में दूध उत्पादन में वृद्धि होना प्रारंभ हो गई। प्रति दिन 28–30 लीटर दूध का उत्पादन होने लगा। इससे दूध व्यवसाय में आर्थिक लाभ अधिक होने लगा।

उन्होंने दुग्ध समिति के माध्यम से बीज प्राप्त होने के कारण हरे चारे हेतु रकबा बढ़ा लिया, जिससे दूध की लागत मूल्य कम होने से ओर आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ।